बलिवैश्व महायज्ञ

(बलिवैश्व देव)

परिवार में सुख, शान्ति एवं सुसंस्कारों की स्थापना हेतु एक अभिनव प्रयोग

मित्रो! यह यज्ञ भगवान हैं, जो प्रत्यक्ष हैं और आपके हाथ का भोजन करने में समर्थ हैं। यह आपको प्रकाश देते हैं, गरमी देते हैं, ज्ञान देते हैं और आपके उज्ज्वल भविष्य की सम्भावना का आश्वासन देते हैं। अपने घरों में बलिवैश्व के रूप में इन यज्ञ भगवान की प्रतिष्ठापना कीजिए और परिवार एवं समाज में सुख, शान्ति एव सुसंस्कारों की स्थापना कीजिए।

अपनी कमाई में भगवान का भी भाग है ।चाहे वह बुद्धि, सम्पत्ति, शक्ति, नौकरी, व्यापार या खेतों की कमाई क्यों नहीं हो परन्तु प्रत्येक मनुष्य के मन में उदारता और परमार्थ परायणता का भाव होना चाहिए। केवल अपने लिए नहीं परन्तु पिछड़े लोग, प्राणी, पक्षी, वृक्ष सबके लिए सोचना चाहिए तभी परमात्मा प्रसन्न रहता है।

थफ इक्ष्क्ष ´ प्यक्ष ा ङ न्क्क्ष्ऱ भ्क्ष्क्ष्क्ष्ृ बलिवैश्व देव न्क्क्ष्ऱ

बलि + वैश्व + देव

बलिः थफ् ृ ङे , ह्क्ष्क्ष्क्ष्क, उ न्डॅ , ज क्ष्क्ष्ं ा ृ ब्ङे

वैश्वः ´ र्स प्क्ष्श्व ष इ्र ि ˆ-छ ि ा षइफ ँ

देवः ृ इ्र ि ङि इ्क्ष्क्षइफ ँ , ृ फ त्क्ष्ृ र्क्ष्इ ा इ्क्ष्क्षइफ ँ

(बलिवैश्व देव अर्थात् समस्त विश्व के लिए उदारता से दिया गया अनुदान।)

अखिल विश्व गायत्री परिवार
गायत्रीतीर्थ-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
www.awgp.org

यज्ञीय भावना तथा प्रक्रिया के माध्यम से अन्न में सुसंस्कारों की स्थापना

'जैसा खाए अन्न, वैसा होवे मन'

सुख-दुःख तथा बन्धन-मुक्ति का कारण है - 'मन'

- अन्न के स्थूल भाग से शरीर में रस, रक्त, माँस, अस्थि, मज्जा, मेद आदि बनते हैं तथा सूक्ष्म भाग से मन बनता है।
- अनीति से प्राप्त धन अथवा पाप की कमाई जीवन में कुसंस्कार और रोगों का कारण बनती है एवं उसका बुरा प्रभाव निश्चित रूप से हमारे मन और बुद्धि पर पड़ता है।
- पाप की कमाई से शारीरिक पुष्टि कदाचित भले ही प्राप्त हो जाय पर मन और आत्मा की तुष्टि उससे कभी नहीं हो सकती। आत्मा की प्रगति का मुख्य साधन मन है और मन का निर्माण अन्न से होता है।
- भोजन से शरीर का पोषण ही नहीं मनुष्य का व्यक्तित्व यानि गुण, कर्म, स्वभाव और संस्कार बनते हैं। अपितु **जैसा आहार, वैसा विचार।**

संस्कारित अन्न का महत्त्व

- हमारे शास्त्र यह बताते हैं कि यज्ञ से वातावरण और अन्न आदि सुसंस्कारी और प्राणवान् बनते हैं।
- यज्ञ में बचा हुआ (यज्ञावशिष्ट) भोजन करने वाला सज्जन पाप कर्मों से मुक्त हो जाता है और जो मात्र अपने लिए बनाता और खाता है, वह पाप खाता है।
- भोजन करने से पूर्व भगवान् को समर्पित करने के बाद भोजन करने से व्यक्ति हरेक प्रकार के ऋण से मुक्त होता है। मात्र भोजन ही नहीं परन्तु अपनी सम्पत्ति, बुद्धि, शक्ति, ज्ञान, वैभव, समय और प्रभाव का एक अंश परमार्थ कार्य के लिए दान करके अपने अथवा परिवार के उपयोग में लेने से व्यक्ति, परिवार और समाज उत्कर्ष और शान्ति प्राप्त करता है।
- भोजन शुद्ध होता है तो अंतःकरण शुद्ध और पवित्र बनता है और अंतःकरण अर्थात सत्व शुद्धि से पूर्णतत्त्व परमात्मा का अनंत स्मरण होता है। इसी से सभी दोष, दुर्गुण और कुसंस्कार का नाश होता है।
- त्यागपूर्वक भोग किया अन्न हमारे अंदर बल और प्राण शक्ति को धारण करता है। ईमानदारी से प्राप्त एवं संस्कारयुक्त अन्न ही मनुष्य में सद्बुद्धि उत्पन्न करता है।

सुगम विधि-विधान

- ईष्टदेव को भोग लगाने के भाव से सफाई एवं पवित्र भावना के साथ भोजन पकाया जाय।
- पकाए हुए भोजन में से नमक, मिर्च-मसाले वाले पदार्थ छोड़कर, फीके या मीठे पदार्थों में से थोड़ा-सा अंश एक साफ तश्तरी में निकाल लें। उसमें थोड़ा-सा घी, शक्कर अथवा हवन सामग्री मिलाकर उसकी बड़े चने के आकार की ९ गोलियाँ बना लें।
- यदि चूल्हे पर भोजन बनाया गया है, तो उसमें से कुछ अंगारे किसी मिट्टी के सकोरे या धातु के चौड़े पात्र में रख लें।
- यदि स्टोव पर या गैस पर भोजन पकाया जाता हो, तो लोहे की मजबूत जाली वाली छन्नी ले सकते हैं। सब्जी चलाने के धातु के चमचे, जिसमें बघार आदि लगाए जाते हैं, उसे लौ पर रखकर आहुतियाँ दी जा सकती हैं। शान्तिकुञ्ज में ताँबे का एक ऐसा पात्र भी तैयार किया गया है, जिसे गैस पर रख कर उसमें आहुतियाँ समर्पित की जा सकती हैं। अपनी सुविधानुसार किसी को भी अपनाया जा सकता है।

फिर नीचे लिखे क्रम से पाँच आहुतियाँ भावनापूर्वक दें।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा **इदं ब्रह्मणे इदं न मम।**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा **इदं देवेभ्यः इदं न मम।**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा **इदं ऋषिभ्यः इदं न मम।**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा **इदं नरेभ्यः इदं न मम।**

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा इदं **भूतेभ्यः इदं न मम।**

पाँचों आहुतियों के बाद अग्नि के चारों ओर जल फेरकर हवन पात्र को एक ओर रख दें। अन्न भस्म हो जाने, अग्नि शान्त हो जाने पर उस भस्म को तुलसी के गमले या किसी पवित्र स्थल पर वृक्ष की जड़ में डाल दें।

बलिवैश्व यज्ञ में पाँच प्रकार के यज्ञों का समावेश

1. **ब्रह्मयज्ञ–** बलिवैश्व यज्ञ करने से ब्रह्म अर्थात् परमात्मा प्रसन्न होते हैं और संस्कारित अन्न रवाने वाले को ब्रह्मज्ञान प्रदान करते हैं जिससे आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है। इसी को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं ।
2. **देवयज्ञ–** नित्य यज्ञ करने से देवता प्रसन्न होते हैं और मनुष्य देवत्व को उपलब्ध हो ऐसी बुद्धि, शक्ति और ज्ञान मिलता है। देवपूजन, हवन, उपासना, साघना को देवयज्ञ कहते हैं।
3. **ऋषियज्ञ–** ऋषियों को आहुति प्रदान करने से ऋषि जीवन जैसे गुण यानि ब्रह्मचर्य पालन, वेद का पठन-पाठन, साधारण जनता के लिए साधना के नियमों की शोध, सत्प्रवृत्ति और ज्ञान संवर्धन हेतु ग्रंथों का निर्माण करने की शक्ति होता को प्रदान करते हैं।
4. **नरयज्ञ–** पशु वृत्तियों, कुविचारों, दोष-दुर्गुणों, कुप्रथाओं को यज्ञ की आहुति के साथ हवन कर दें और सबके साथ प्रेम, मैत्रीभाव, करुणा और सेवा भाव का विकास करना यही नरयज्ञ है ।
5. **भूतयज्ञ–** पशु, पक्षी, वृक्ष, वनस्पति, कीट-पतंग सबका पालन-पोषण और हमारी आत्मीयता और करुणा का सबके प्रति विस्तार करना यही भूतयज्ञ है। अन्य प्राणी के दुःखों की अनुभूति स्वयं करना 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' अर्थात् भूतयज्ञ।

बहुत ही सरल है.....
कुछ दिन यह प्रक्रिया करके
आप खुद अनुभव करके देखें।